स एव सृज्यः स च सर्गकर्ता स एव पात्यत्ति च पाल्यते च ।
ब्रह्माद्यवस्थाभिरशेषमूर्तिर्विष्णुर्वरिष्ठो वरदो वरेण्यः ॥७०॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे प्रथमेऽशे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

तीसरा अध्याय

श्रीमैत्रेय उवाच

निर्गुणस्याप्रमेयस्य शुद्धस्याप्यमलात्मनः। कथं सर्गादिकर्तृत्वं ब्रह्मणोऽभ्युपगम्यते ॥१॥
शक्तयः सवीभवानामचिन्त्यज्ञानगोचराः । यतोऽतो ब्रह्मणस्तास्तु सर्गाद्या भावशक्तयः ।
भवन्ति तपतां श्रेष्ठ पावकस्य यथोष्णता ॥२॥
तन्निबोध यथा सर्गे भगवान्सम्प्रवर्त्तते । नारायणाख्यो भगवान्ब्रह्मा लोकपितामहः ॥३॥
उत्पन्नः प्रोच्यते विद्वन्नित्यमेवोपचारतः ॥४॥
निजेन तस्य मानेन आयुर्वर्षशतं स्मृतम्। तत्पराख्यं तदर्द्धं च परार्द्धमभिधीयते॥५॥
कालस्वरूपं विष्णोश्च यन्मयोक्तं तवानघ । तेन तस्य निबोधत्वं परिमाणोपपादनम् ॥६॥

रहने वाले भगवान् विष्णु ही सबों की अन्तरात्मा हैं तथा वे विश्वरूप हैं । अर्थात् सम्पूर्ण जगत् उनका शरीर है । प्राणियों के द्वारा होने वाली सृष्टि भी उनकी ही उपकारिका है ॥६८-६९॥ वे ही सृज्य सृष्टि किए जाने वाले तथा वे ही सृष्टि करने वाले भी हैं । वे ही सम्पूर्ण जगत् की रक्षा करते हैं, तथा रक्षा भी उनकी ही होती है । सबों से श्रेष्ठ, वर देने वाले और वरेण्य भगवान् विष्णु ही, सम्पूर्ण जगत् शरीरक हैं, तथा ब्रह्मा आदि की अवस्थाओं को धारण करके सृष्ट्यादि कर्म को करते हैं ॥७०॥

इस तरह श्रीविष्णुमहापुराण के प्रथम अंश के दूसरे अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥२॥

ब्रह्मा आदि की आयु और काल के स्वरूप का वर्णन

मैत्रेय महर्षि ने पूछा— जो परब्रह्म निर्गुण (प्राकृतिक गुणों से रहित) अप्रेमय, (प्राकृतिक दोषों से रहित होने के कारण) शुद्ध तथा निर्मल स्वरूप हैं, वे ही परब्रह्म जगत् की सृष्टि आदि का कार्य क्यों करते हैं ?॥१॥ **श्रीपराशर महर्षि ने कहा—** हे तपस्वियों में श्रेष्ठ मैत्रेय ! चूकि सभी भाव पदार्थों की शक्तियाँ अचिन्त्य ज्ञान का विषय हैं, (उनके विषय में कोई भी तर्क काम नहीं करता है) जिस तरह अग्नि की उष्णता की शक्ति स्वाभाविक है, उसी तरह परब्रह्म की जगत् की सृष्टि आदि करने की शक्ति भी स्वाभाविक है ॥२॥ जिस तरह नारायण शब्द से कहे जाने वाले भगवान् लोक पितामह ब्रह्मा रूप से सृष्टि के कार्य में प्रवृत्त होते हैं, उसे आप हमसे सुनें ॥३॥ हे विद्वन्! ब्रह्माजी नित्य हैं, किन्तु उन्हें औपचारिक रूप से (ब्रह्मा उत्पन्न हुए) यह कहा जाता है ॥४॥ उनके परिमाण से ब्रह्माजी की आयु सौ वर्ष की है । उनकी उस आयु को परशब्द से कहा जाता है, उसके आधे भाग को परार्द्ध कहा जाता है ॥५॥ हे अनघ ! (निष्पाप) मैंने जो तुम्हें भगवान् विष्णु के कालस्वरूप को बतलाया है उसी

अन्येषां चैव जन्तूनां चराणामचराश्च ये । भूभूभृत्सागरादीनामशेषाणां च सत्तम ॥७॥
काष्ठा पञ्चदशाख्याता निमेषा मुनिसत्तम । काष्ठा त्रिंशत्कला त्रिंशत्कला मौहूर्तिको विधिः ॥८॥
तावत्संख्यैरहोरात्रं मुहूर्त्तैर्मानुषं स्मृतम् । अहोरात्राणि तावन्ति मासः पक्षद्वयात्मकः॥९॥
तैः षड्भिरयनं वर्षं द्वेऽयने दक्षिणोत्तरे। अयनं दक्षिणं रात्रिर्देवानामुत्तरं दिनम्॥१०॥
दिव्यैर्वर्षसहस्त्रैस्तु कृतत्रेतादिसंज्ञितम् । चतुर्युगं द्वादशभिस्तद्विभागं निबोध मे ॥११॥
चत्वारि त्रीणि द्वे चैकं कृतादिषु यथाक्रमम् । दिव्याब्दानां सहस्त्राणि युगेष्वाहुः पुराविदः ॥१२॥
तत्प्रमाणैः शतैः सन्ध्या पूर्वा तत्राभिधीयते। सन्ध्यांशश्चैव तत्तुल्यो युगस्यानन्तरो हि सः ॥१३॥
सन्ध्यासन्ध्यांशयोरन्तर्यः कालो मुनिसत्तम। युगाख्यः स तु विज्ञेयः कृतत्रेतादिसंज्ञितः ॥१४॥
कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिश्चैव चतुर्युगम् । प्रोच्यते तत्सहस्त्रं च ब्रह्मणो दिवसं मुने ॥१५॥
ब्रह्मणो दिवसे ब्रह्मन्मनवस्तु चतुर्दश। भवन्ति परिमाणं च तेषां कालकृतं श्रृणु ॥१६॥
सप्तर्षयः सुराः शक्रो मनुस्तत्सूनवो नृपाः। एककाले हि सृज्यन्ते संह्रियन्ते च पूर्ववत् ॥१७॥
चतुर्युगाणां संख्याता साधिका ह्येकसप्ततिः । मन्वन्तरं मनोः कालः सुरादीनां च सत्तम ॥१८॥
अष्टौ शत सहस्त्राणि दिव्यया संख्यया स्मृतम् । द्विपञ्चाशत्तथान्यानि सहस्त्राण्यधिकानि तु ॥१९॥

के द्वारा ब्रह्माजी की, तथा उनसे भिन्न जो चराचर जीव हैं, उनकी आयु का परिमाण बतलाया जाता है ॥६-७॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! पन्द्रह निमेष की एक काष्ठा होती है । तीस काष्ठा की एक कला होती है और तीस कला का एक मुहूर्त होता है ॥८॥ तीस मुहूर्त का मनुष्य का एक दिन और रात्रि होती है तीस दिन और तीस रात्रि का एक मास होता है एक मास में दो पक्ष होते हैं ॥९॥ छह मासों को मिलाकर एक अयन होता है । उत्तरायण एवं दक्षिणायन इन दो अयनों का एक वर्ष होता है । दक्षिणायन में देवताओं की रात होती है और उत्तरायण में देवताओं का दिन होता है॥१०॥ देवताओं के बारह हजार वर्षों के कृतयुग (सत्ययुग) त्रेतायुग आदि (द्वापर युग तथा कलियुग) ये चार युग होते हैं । उन चारो युगों का विभाग मुझसे सुनो ॥११॥ इतिहास के जानने वाले सत्ययुग का परिमाण देवताओं के चार हजार वर्ष का, त्रेतायुग का परिमाण देवताओं के तीन हजार वर्ष, द्वापर युग का परिमाण दो हजार वर्ष तथा कलियुग का परिमाण देवताओं के एक हजार वर्ष का बतलाते हैं ॥१२॥ जिस युग का परिमाण जितने हजार वर्ष का होता है, उस युग की पूर्व सन्ध्या और सन्ध्यांश भी उतने ही सौ वर्षों के होते हैं । सन्ध्यांश युग के पीछे होता है। इस तरह सत्ययुग की सन्ध्या भी देवताओं के चार सौ वर्षों की; और सन्ध्यांश भी चार सौ वर्षों की; इसी तरह त्रेता की सन्ध्या और सन्ध्यांश तीन-तीन सौ वर्षों की द्वापर युग की सन्ध्या और सन्ध्यांश दो-दो सौ वर्षों की और कलियुग की सन्ध्या और सन्ध्यांश सौ-सौ वर्षों की होती हैं ॥१३॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! संध्या और सन्ध्यांश के बीच का जो समय होता है, उसे ही सत्ययुग आदि नामों से अभिहित किया जाता है ॥१४॥ हे मुने ! सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग ये चारो मिलकर चतुर्युग कहलाते हैं । एक हजार चतुर्युगों का ब्रह्माजी का एक दिन होता है॥१५॥ हे ब्रह्मन् ! ब्रह्माजी के एक दिन में चौदह मनु होते हैं; उनका तुम कालकृत परिमाण सुनो ॥१६॥ सप्तर्षि, देवता, इन्द्र, मनु, मनुओं के पुत्र, राजागण इनकी पूर्व कल्पानुसार एक ही समय में सृष्टि होती है और एक ही काल में इनका संहार भी होता है ॥१७॥ हे सत्तम (श्रेष्ठ पुरुष मैत्रेय) ! एकहत्तर चतुर्युगों से कुछ अधिक समय का एक मन्वन्तर होता है । यही (मन्वन्तर ही) मनु तथा उन मन्वन्तर के देवताओं का काल होता है ॥१८॥ इस तरह दिव्य (देवताओं के) वर्ष गणना के अनुसार एक मन्वन्तर में आठ लाख बावन हजार दिव्य वर्षों का एक मन्वन्तर होता

त्रिंशत्कोट्यस्तु सम्पूर्णाः संख्याताः संख्यया द्विज। सप्तषष्टिस्तथान्यानि नियुतानि महामुने ॥२०॥
विंशतिस्तु सहस्राणि कालोऽयमधिकं विना। मन्वन्तरस्य सङ्ख्येयं मानुषैर्वत्सरैर्द्विज ॥२१॥
चतुर्दशगुणो ह्येष कालो ब्राह्ममहः स्मृतम्। ब्राह्मो नैमित्तिको नाम तस्यान्ते प्रतिसञ्चरः ॥२२॥
तदा हि दह्यते सर्वं त्रैलोक्यं भूर्भुवादिकम्। जनं प्रयान्ति तापार्ता महर्लोकनिवासिनः ॥२३॥
एकार्णवे तु त्रैलोक्ये ब्रह्मा नारायणात्मकः। भोगिशय्यां गतः शेते त्रैलोक्यग्रासबृंहितः ॥२४॥
जनस्थैर्योगिभिर्देवैश्चिन्त्यमानोऽब्जसम्भवः। तत्प्रमाणां हि तां रात्रिं तदन्ते सृजते पुनः ॥२५॥
एवं तु ब्रह्मणो वर्षमेवं वर्षशतं च यत्। शतं हि तस्य वर्षाणां परमायुर्महात्मनः ॥२६॥
एकमस्य व्यतीतं तु परार्द्धं ब्रह्मणोऽनघ। तस्यान्तेऽभून्महाकल्पः पाद्म इत्यभिविश्रुतः ॥२७॥
द्वितीयस्य परार्द्धस्य वर्तमानस्य वै द्विज। वाराह इति कल्पोऽयं प्रथमः परिकीर्तितः ॥२८॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे प्रथमेंऽशे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

चौथा अध्याय

श्रीमैत्रेय उवाच

ब्रह्मा नारायणाख्योऽसौ कल्पादौ भगवान्यथा। ससर्ज सर्वभूतानि तदाचक्ष्व महामुने ॥१॥

है ॥१९॥ हे द्विज ! हे महामुने ! मनुष्यों के वर्ष गणना के अनुसार तीस करोड़, सड़सठ लाख और बीस हजार वर्ष का एक मन्वन्तर होता है, इससे अधिक का नहीं ॥२०-२१॥ इसके चौदह गुना बड़ा ब्रह्माजी का एक दिन होता है। उसके बाद नैमित्तिक प्रलय होता है। उसे ही ब्राह्म प्रतिसञ्चर (प्रलय) कहते हैं ॥२२॥ उस समय भूर्लोक, भुवर्लोक तथा स्वर्लोक ये तीनों लोक जलने लगते हैं, और महर्लोक में रहने वाले जीव उसकी ज्वाला से सन्तप्त होकर जनलोक में चले जाते हैं ॥२३॥ जब तीनों लोक जलमय हो जाते हैं, उस समय नारायणात्मक (नारायण ही जिनकी आत्मा हैं) ऐसे जनलोक निवासी ऋषियों तथा देवताओं से ध्यान किए जाने वाले कमलयोनि ब्रह्माजी त्रैलोक्य के ग्रास से तृप्त होकर अपने दिन के ही समान परिमाण वाली रात्रि में शेषशय्या पर शयन करते हैं। और उसके (रात्रि के) समाप्त हो जाने पर पुनः सृष्टि करते हैं ॥२५॥ इसी तरह (पक्ष, मास आदि) की गणना के अनुसार ब्रह्माजी का वर्ष होता है और उस वर्ष से एक सौ वर्ष की ब्रह्माजी की आयु होती है। इसे ही महात्मा ब्रह्माजी की परमायु कहते हैं ॥२६॥ हे अनघ ! ब्रह्माजी का एक परार्द्ध बीत चुका है। उसके अन्त में प्रख्यात पाद्म नामक महाकल्प हुआ था ॥२७॥ हे द्विज ! वर्तमान द्वितीय परार्द्ध का यह वाराहकल्प है। यह इस परार्द्ध का पहला कल्प है ॥२८॥

इस तरह विष्णु महापुराण के प्रथम अंश के तीसरे अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥३॥

ब्रह्माजी की उत्पत्ति, वराह भगवान् द्वारा पृथिवी का उद्धार तथा ब्रह्माजी द्वारा लोकों की रचना

श्रीमैत्रेयजी ने कहा— हे महामुने ! कल्प के प्रारम्भ में नारायण नामक भगवान् (ऐश्वर्य सम्पन्न) ब्रह्माजी ने, जिस तरह सम्पूर्ण भूतों की सृष्टि की उसे आप मुझे सुनायें ॥१॥ **श्रीपराशर महर्षि ने कहा—** प्रजापतियों के स्वामी,